पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा रचित प्रार्थना पुस्तक

संपादन एवं प्रकाशन : जीवन-धाम ©

विषय-सूची

क्रम सं०	विषय	प ष्ठ सं०
	भाग-1	
1.	ईश्वर हमें दुःख और कठिनाई क्यों देते हैं ?	1
2.	विश्वास द्वारा ही उद्धार	3
3.	प्रभु हमारी क्यों नहीं सुनते ?	5
4.	पिता की इच्छा क्या है ?	6
5.	क्षमा और प्रेम की आवश्यकता	7
6.	प्रार्थना का उद्देश्य	10
7.	समर्पण	12
8.	पछतावे की विनती	13
9.	सदा प्रभु की स्तुति करो	14
10.	दस आज्ञाँए	16
11.	दो प्रमुख आज्ञाँए	17
12.	पवित्र आत्मा से प्रार्थना	17
13.	पवित्र आत्मा में परिपूर्ण जीवन	18
	भाग-2	
14.	सामान्य प्रार्थनाँए	20

क्रम सं०	विषय	प ष्ठ सं०
15.	**पवित्र कुँवारी मरिया की माला विनती**	22
	क) आनन्द के पाँच भेद	24
	ख) प्रकाश के पाँच भेद	26
	ग) दुःख के पाँच भेद	28
	घ) महिमा के पाँच भेद	29
16.	**करुणा की माला विनती**	36
	भाग-3	
17.	प्रभु में नया जीवन	37
18.	भजन	
	क) आत्मा, आत्मा	41
	ख) हे जीवित परमेश्वर	42
	ग) हे माँ मरियम	43
	घ) तेरी आराधना	44
	भाग-4	
19.	**नित्य सहायक माता से नोवेना प्रार्थनाँए**	46
20.	प्रभु के दूत का संदेश	54
21.	हे स्वर्ग की रानी	55
22.	गीत – स्तुति करें हम आल्लेलूया	56
23.	**प्रतिदिन की पारिवारिक प्रार्थना**	57

भाग - 1

ईश्वर हमें दु:ख और कठिनाई क्यों देते हैं -

"यह इसलिए हुआ कि मनुष्य ईश्वर का अनुसन्धान करें और उसे खोजते हुए सम्भवत: उसे प्राप्त करें, यद्यपि वास्तव में वह हम में से किसी से भी दूर नहीं है; क्योंकि उसी में हमारा जीवन, हमारी गति तथा हमारा अस्तित्व निहित है"।

(प्रेरित चरित 17:27-28)

यह बात हम कभी नहीं सोचते। लौकिक इच्छा में खोये हुए व्यक्ति अपने स्वार्थ के कारण इस धरती के ही मनुष्य बन जाते हैं और इसलिए वह दु:खों और तकलीफों से लड़ते और जूझते रहते हैं और इस से कभी बाहर नहीं निकल पाते।

ईश्वर हमें यह बताते हैं, "मेरी प्रजा ने दो अपराध कर डाले: उसने मुझे, संजीवन जल के स्त्रोत को त्याग दिया और अपने लिए ऐसे कुण्ड बनाए, जिन में दरारें हैं और जिन में पानी नहीं ठहरता।" **(यिरमियाह 2:13)**

"प्रभु जिसे प्यार करता है, उसे दण्ड़ देता है और जिसे पुत्र मानता है, उसे कोड़े लगाता है।" **(इब्रानियों 12:6)**

परमेश्वर का व्यवहार हमारे प्रति ऐसा है जैसे पिता का पुत्र के साथ होता है। जब ईश्वर हमें ताड़ना देता है, तो वह हमें इस तरह अपने चरणों पर आने के लिए आमंत्रित करता है कि हम उसकी पवित्रता में सहभागी हों। कोई भी ताड़ना प्रताड़ना के समय सुखद नहीं दु:खद प्रतीत होती है, परन्तु जो उसका बार–बार अनुभव करते हैं उनको बाद में धार्मिकता का शान्तिप्रद फल प्राप्त होता है। अत: हमें चाहिए कि हम सीधे मार्ग पर चलें, हम जीवन जल के झरने की ओर अग्रसित हों और उसे अपना लें।

प्रभु येशु ने कहा, **"यदि कोई प्यासा हो, तो वह मेरे पास आए। जो मुझ में विश्वास करता है, वह अपनी प्यास बुझाये।"** **(सन्त योहन 7:37-38)**

विश्वास द्वारा ही उद्धार

ईश्वर के द्वारा भेजे गये उसके इकलौते पुत्र येशु–मसीह पर हम विश्वास करें जिसने हम सभी पापियों के पाप प्रायश्चित के लिए क्रूस पर अपना जीवन अर्पित किया।

पवित्र ग्रन्थ के अनुसार– "किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा मुक्ति नहीं मिल सकती; क्योंकि समस्त संसार में येशु नाम के सिवा मनुष्यों को कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है, जिसके द्वारा हमें मुक्ति मिल सकती है।" **(प्रेरित चरित 4:12)**

मनुष्य प्रव त्ति से ही चिंता और व्याकुलता अपने मन में रखता है। सांसारिक दु:खों से वह व्याकुल रहता है। येशु ने कहा, "तुम्हारा जी घबराये नहीं। ईश्वर में विश्वास करो और मुझ में भी विश्वास करो !" **(सन्त योहन 14:1)**

"यदि आप लोग मुख से स्वीकार करते हैं कि **येशु** प्रभु हैं और हृदय से विश्वास करते हैं कि ईश्वर ने उन्हें म तकों में से जिलाया, तो आप को मुक्ति प्राप्त होगी। हृदय से विश्वास करने पर मनुष्य धर्मी बनता है और मुख से स्वीकार करने पर उसे मुक्ति प्राप्त होती है।" **(रोमियों 10:9-10)**

प्रभु ही हमारे सब कार्यों को सम्पन्न करने वाला है, अत: चिंता करना व्यर्थ है। "चिन्ता करने से तुम में से कौन अपनी आयु घड़ी भर भी बढ़ा सकता है?"

(सन्त मत्ती 6:27)

(हम अपने हृदय में एक मिनट विचार करें, कि क्या चिन्ता करके हमने अभी तक कुछ पाया है ? हम अपनी सभी चिन्ताओं को प्रभु के चरणों में सौंप दें।)

प्रभु येशु कहते हैं, "तुम सब से पहले ईश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो और ये सब चीज़ें तुम्हें यों ही मिल जाएँगी।" **(सन्त मत्ती 6:33)**

"सबों का प्रभु एक ही है। वह उन सबों के प्रति उदार है, जो उसकी दुहाई देते हैं; क्योंकि जो प्रभु के नाम की दुहाई देगा, उसे मुक्ति प्राप्त होगी।" **(रोमियों 10:12-13)**

"जितनों ने उसको अपनाया, और जो उसके नाम में विश्वास करते हैं, उन सबों को उसने ईश्वर की सन्तति बनने का अधिकार दिया।" **(सन्त योहन 1:12)**

यह इसलिए है क्योंकि ईश्वर ने सारे अधिकार अपने इकलौते पुत्र 'प्रभु येशु' को दिये हैं। प्रभु येशु ने कहा, "मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है। पिता को छोड़ कर कोई भी पुत्र को नहीं जानता। इसी तरह पिता को कोई भी नहीं जानता, केवल पुत्र जानता है और वही, जिस पर पुत्र उसे प्रकट करने की कृपा करे।" **(सन्त मत्ती 11:27)**

"मैं और पिता एक हैं।" **(सन्त योहन 10:30)** (पुत्र के अधिकारों के विषय में हम **"योहन 5:19 से 30"** तक के वचन पढ़ सकते हैं।)

प्रभु हमारी प्रार्थना क्यों नहीं सुनते ?

हमारी प्रार्थनाँए हमारी अपनी कमियों के कारण स्वीकार नहीं होतीं। येशु ने कहा "जो लोग मुझे ञ"प्रभु! प्रभु!" कह कर पुकारते हैं, उन में सब-के-सब स्वर्गराज्य में प्रवेश नहीं करेंगे। जो मेरे स्वर्गिक पिता की इच्छा पूरी करता है, वही स्वर्गराज्य में प्रवेश करेगा।" **(सन्त मत्ती 7:21)**

प्रभु येशु ने कहा, "जिसने मुझे भेजा, उसकी इच्छा पर चलना और उसका कार्य पूरा करना, यही मेरा भोजन है।"

(सन्त योहन 4:34)

पर पिता की इच्छा क्या है ?

येशु ने कहा, "मेरे पिता की इच्छा यह है कि जो पुत्र को पहचान कर उस में विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन प्राप्त हो। मैं उसे अन्तिम दिन पुनर्जीवित कर दूँगा।"

(सन्त योहन 6:40)

प्रभु येशु ने कहा, "**पहली आज्ञा** यह है– हमारा प्रभु–ईश्वर एकमात्र प्रभु है। अपने प्रभु–ईश्वर को अपने **सारे हृदय, अपनी सारी आत्मा, अपनी सारी बुद्धि और सारी शक्ति से प्यार करो**। **दूसरी आज्ञा यह है – अपने पड़ोसी** को **अपने समान प्यार करो**। इनसे बड़ी कोई आज्ञा नहीं है।"

(सन्त मारकुस 12:29-31)

"हम एक दूसरे को प्यार करें, क्योंकि प्रेम ईश्वर से उत्पन्न होता है। जो प्यार करता है, वह ईश्वर की सन्तान है और ईश्वर को जानता है। जो प्यार नहीं करता, वह ईश्वर को नहीं जानता; क्योंकि ईश्वर प्रेम है।" **(1योहन 4:7-8)**

"यदि कोई कहता है कि मैं ईश्वर को प्यार करता हूँ और वह अपने भाई से बैर करता, तो वह झूठा है। यदि वह अपने भाई को, जिसे वह देखता है, प्यार नहीं करता, तो वह ईश्वर को, जिसे उसने कभी देखा नहीं, प्यार नहीं कर सकता।"

(1योहन 4:20)

क्षमा और प्रेम की आवश्यकता

येशु ने कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ–अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम पर अत्याचार करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो। इस से तुम अपने स्वर्गिक पिता की सन्तान बन जाओगे।"

(सन्त मत्ती 5:44-45)

(येशु ने स्वंय हमें 'शत्रुओं से प्रेम' और उनके लिए 'प्रार्थना' करके हमारे समक्ष एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण रखा है। इसके लिए **"सन्त लूकस 23:34"** पढ़ा जा सकता है।)

"सबों के साथ शान्ति बनाये रखें और पवित्रता की साधना करें। इसके बिना कोई ईश्वर के दर्शन नहीं कर पायेगा। आप सावधान रहें – कोई ईश्वर की कृपा से वंचित न हो। ऐसा कोई कड़वा और हानिकर पौधा पनपने न पाये, जो समस्त समुदाय को दूषित कर दे।" **(इब्रानियों 12:14-15)**

"जब तुम प्रार्थना के लिए खड़े हो और तुम्हें किसी से कोई शिकायत हो, तो क्षमा कर दो, जिससे तुम्हारा स्वर्गिक पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा कर दे।"

(सन्त मारकुस 11:25; सन्त मत्ती 6:14)

हमारे हृदय में किसी के प्रति कोई भी शिकायत न हो यद्यपि कोई भी कारण हो – चाहे किसी ने हमें दुःख दिया हो, घ णा भाव से देखा हो, झूठे इल्ज़ाम लगाकर अदालत में खड़ा करवाया हो, नौकरी से निकलवाया हो, हमारी सम्पत्ति को नष्ट किया हो, हमारा अपमान किया हो, झूठा बनाया हो, हमें गलत रास्ते पर ले गया हो, मारने की कोशिश की हो, परिवार को बर्बाद करना चाहा हो या फिर हमारी निन्दा भी की हो। हमें सबको क्षमा करना है। पूर्ण हृदय से पवित्र व्यक्ति ही प्रभु को स्वीकार कर सकता तथा शारीरिक और मानसिक चंगाई प्राप्त कर सकता है।

प्रार्थना– हे येशु ! दूसरों को क्षमा व प्रेम करने की शक्ति मुझे प्रदान कर दीजिए। जिसने भी मुझे दुःख दिया है उसको क्षमा करते हुए, उससे प्रेम करने की कृपा मुझे दे दीजिए। यदि मैंने अपने कार्य से या अनुचित बोलकर किसी का दिल दुःखाया हो, तो उससे क्षमा माँगने की शक्ति भी मुझे दे दीजिए। हे येशु ! मुझ पापी पर दया कर, मुझपर कृपा कर। मेरे पापों को क्षमा कर तथा मेरे हृदय को हर बुराई, पाप, प्रलोभन, दुर्वासनाओं व दोषीली भावनाओं से मुक्त कर। आमेन।

येशु ने शिक्षा दी, "जब तुम वेदी पर अपनी भेंट चढ़ा रहे हो और तुम्हें वहाँ याद आए कि मेरे भाई को मुझसे कोई शिकायत है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ कर पहले अपने भाई से मेल करने जाओ और तब आकर अपनी भेंट चढ़ाओ।"

(सन्त मत्ती 5:23-24)

"जो अपने भाई से बैर करता है, वह हत्यारा है और तुम जानते हो कि किसी भी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं होता।"

(1 योहन 3:15)

"जो अपने पाप छिपाता, वह उन्नति नहीं करेगा; जो उन्हें प्रकट कर छोड़ देता, उस पर दया की जायेगी।"

(सूक्ति ग्रन्थ 28:13)

यदि आप कैथोलिक – कलीसिया के विश्वासीजन हों तो आपको प्रभु की आज्ञा अनुसार शुद्ध हृदय से अपने पुरोहित के समक्ष अपने पाप स्वीकार नियमित रुप से करने चाहिएँ और प्रत्येक इतवार को पवित्र मिस्सा बलिदान में अवश्य भाग लेकर परम प्रसाद स्वीकार करना चाहिए। परमप्रसाद प्रभु का शरीर और रक्त है। इसलिए –

"जो अयोग्य रीति से प्रभु की रोटी खाता या प्रभु का प्याला पीता है, वह प्रभु के शरीर और रक्त के विरूद्ध अपराध करता है। अपने अन्तःकरण की परीक्षा करने के बाद ही मनुष्य वह रोटी खाए और वह प्याला पिये। जो प्रभु का शरीर पहचाने बिना खाता और पीता है, वह अपनी ही दण्डाज्ञा खाता और पीता है। यही कारण है कि आप में बहुत-से लोग रोगी और दुर्बल हैं और कुछ लोग मर गए हैं।"

(1 कुरिन्थियों 11:27-30)

"तुम्हें शान्ति मिले। जिस प्रकार पिता ने मुझे भेजा, उसी प्रकार मैं तुम्हें भेजता हूँ।" इन शब्दों के बाद येशु ने उन पर फूँक कर कहा, "पवित्र आत्मा को ग्रहण करो! तुम जिन लोगों के पाप क्षमा करोगे, वे अपने पापों से मुक्त हो जायेंगे और जिन लोगों के पाप क्षमा नहीं करोगे, वे अपने पापों से बँधे रहेंगे।"

(सन्त योहन 20:21-23)

प्रार्थना का उद्देश्य

अपनी निजी आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। पर वह दूसरों को भी अपने सद श समझे और अपने तथा दूसरों के दुःख दूर करने के लिए, रोगों से मुक्ति के लिए और जो हमारी इच्छाँए हैं उनके लिए प्रार्थना करे। इसके अतिरिक्त येशु हमें शत्रुओं से भी

प्रेम करना और उनके लिए प्रार्थना करना भी सिखलाते हैं जिसके लिए हमें पवित्रात्मा से भरपूर होना है। पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए हमें प्रभु से विनम्र और शुद्ध हृदय से प्रार्थना करनी होगी।

"मैं तुमसे कहता हूँ – माँगो और तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ो और तुम्हें मिल जायेगा; खटखटाओ और तुम्हारे लिए खोला जाएगा। क्योंकि जो माँगता है, उसे दिया जाता है; जो ढूँढ़ता है, उसे मिल जाता है और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाता है। यदि तुम्हारा पुत्र तुमसे रोटी माँगे, तो तुम में से ऐसा कौन है, जो उसे पत्थर देगा ? अथवा मछली माँगे, तो मछली के बदले उसे साँप देगा? अथवा अण्डा माँगे, तो उसे बिच्छु देगा? बुरे होने पर भी यदि तुम लोग अपने बच्चों को सहज ही अच्छी चीज़ें देते हो, तो तुम्हारा स्वर्गिक पिता माँगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों नहीं देगा?"

(सन्त लूकस 11:9-13; सन्त मत्ती 7:7-11)

"मैं तुमसे यह भी कहता हूँ – यदि प थ्वी पर तुम लोगों में दो व्यक्ति एकमत हो कर कुछ भी माँगेंगे, तो वह उन्हें मेरे स्वर्गिक पिता की ओर से निश्चय ही मिलेगा।"

(सन्त मत्ती 18:19)

"मैं तुमसे कहता हूँ – तुम जो कुछ प्रार्थना में माँगते हो, विश्वास करो कि वह तम्हें मिल गया है और वह तुम्हें दिया जाएगा।" **(सन्त मारकुस 11:24)**

समर्पण

पवित्र ग्रन्थ में सन्त योहन के पत्र में हम पढ़ते हैं–

"यदि हम कहते हैं कि हम निष्पाप हैं, तो हम अपने आप को धोखा देते हैं और हम में सत्य नहीं हैं। यदि हम अपने पाप स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर हमारे पाप क्षमा करेगा और हमें हर अधर्म से शुद्ध करेगा; क्योंकि वह विश्वसनीय और सत्यप्रतिज्ञ है। यदि हम कहते हैं कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम परमेश्वर को झूठा सिद्ध करते हैं और उसका सत्य हम में नहीं है।" **(1योहन 1:8-10)**

इसलिए हम यह हमेशा याद रखें कि हमने बहुत पाप किये हैं। हम पापी, कमज़ोर और अयोग्य मनुष्य ईश्वर के समक्ष खड़े होने योग्य नहीं हैं क्योंकि हम हर रोज़ उनके विरुद्ध अनेक पाप करते रहते हैं। प्रभु येशु को, जो हमारे लिए एक बार क्रूस पर चढ़े और बलि हुए, हम अपने पापों द्वारा उत्पीड़ित करते और उन पर अत्याचार करते हैं।

हम अपने किये सभी पापों को याद करें, उन सबको प्रभु के चरणों में समर्पित कर उनके लिए प्रभु से क्षमा माँगें

और भविष्य में उन पापों को न करने की प्रतिज्ञा इसी क्षण ले लें। इस प्रतिज्ञा पर अटल रहने के लिए हम प्रभु येशु से प्रार्थना करें और माँ मरियम तथा सब सन्तों की मध्यस्थता की अपेक्षा करें।

"क्योंकि सबों ने पाप किया और सब ईश्वर की महिमा से वंचित किये गये। ईश्वर की कृपा से सबों को मुफ्त में पापमुक्ति का वरदान मिला है; क्योंकि येशु मसीह ने सबों का उद्धार किया है।" **(रोमियों 3:23-24)**

"इसलिए तुम पाप न करो। किन्तु यदि कोई पाप करता, तो पिता के पास हमारे एक सहायक विद्यमान हैं, अर्थात् धर्मात्मा येशु मसीह। उन्होंने हमारे पापों के लिए प्रायश्चित किया है और न केवल हमारे पापों के लिए, बल्कि समस्त संसार के पापों के लिए भी।" **(1 योहन 2:1-2)**

इन वचनों को ध्यान में रखकर और अपने पापों को याद कर हम विनम्र हृदय से कुछ मिनट मौन बैठें।

हम अपने पापों के प्रायश्चित के लिए यह विनती करें–

पछतावे की विनती

हे मेरे ईश्वर ! मैं हृदय से उदास हूँ कि मैंने तेरी असीम भलाई और बड़ाई के प्रति अपराध किया है। मैं अपने सब पापों से बैर और घिन्न करता हूँ इसलिए कि तू, हे मेरे ईश्वर! जो मेरे पूरे प्रेम के इतने योग्य है, मेरे पापों से नाराज

हो जाता है। मैं यह द ढ़ प्रतिज्ञा करता हूँ कि तेरी पवित्र कृपा से, तेरा अपराध और कभी न करुँगा और पाप के जोखिमों से दूर रहूँगा। आमेन।

समर्पण गीत

1. हे परमेश्वर, मैं करता हूँ
तेरी आराधना, तेरी स्तुति
तू मेरा जीवन सर्वस्व भी ले
तेरी आराधना, तेरी स्तुति। (2)

2. हे येशु देवा, मैं करता हूँ ....तेरी स्तुति (2)

3. हे पावन आत्मा, मैं करता हूँ ....तेरी स्तुति (2)

सदा प्रभु की स्तुति करो!

हम ईश्वर की स्तुति करें। ईश्वर हमारा स ष्टिकर्ता है। वही हमारा पालनहार है। उसकी स्तुति करने से हम पैशाचिक बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। इसके द्वारा ईश्वर हम पर प्रसन्न होते हैं और हम पर कृपाँए बरसाते हैं।

ईश्वर की स्तुति हो ! ईश्वर को धन्यवाद !
येशु की स्तुति हो ! येशु को धन्यवाद !
पवित्र आत्मा की स्तुति हो !
पवित्र आत्मा को धन्यवाद !
मेरे दुःख–संकट के प्रति,

मुझे नया जीवन देने के प्रति,
मुझे पापों से दूर रखने के प्रति,
हमेशा मेरे साथ रहने के प्रति,
अंधकार से ज्योति की ओर ले जाने के प्रति,
मुझे दूसरों के लिए प्रार्थना करना सिखाया इसलिए,
मुझे हमेशा रक्षा प्रदान करने के प्रति,
हर बुराई को हमारी भलाई में बदलने वाले हे येशु,
अपने चरणों पर मुझे बुलाने के प्रति,
मुझे शान्ति देने वाले हे येशु,
मुझे प्यार से भरने वाले हे येशु,
मुझे पवित्रात्मा प्रदान करने वाले हे येशु,
हमारे बीच अदभुत् चमत्कार दिखलाने
वाले हे प्रभु येशु,
मेरी कमज़ोरियों के प्रति,
ईश्वर का वचन हमें सिखलाने के प्रति,
इस धरती पर जन्म लिया हे येशु,
आज तक तूने मुझे सम्भाला इसके लिए हे येशु,
मेरे पापों के प्रति क्रूस पर जान बलिदान दिया हे येशु,
म तकों में से तीसरे दिन जी उठे हे येशु,
मेरी हर प्रार्थनाओं का जवाब देने वाले हे येशु,
(इसी तरह प्रभु द्वारा दी गई_कृपाओं को याद करके हम उसे नित्य स्तुति और धन्यवाद की भेंट चढ़ायें।)

(मैं तेरी स्तुति करता हूँ।
मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ।)

आल्लेलूया ! आल्लेलूया (इसे हम बार-बार कहें)

आल्लेलूया - इस शब्द का अर्थ है ईश्वर को स्तुति और धन्यवाद।

(हम पवित्र ग्रन्थ खोलकर दिया भाग पढ़ें और प्रभु हमसे क्या कहते हैं, उसका ध्यान कुछ क्षणों के लिए करें।)

नबी मूसा द्वारा हमें दीं ईश्वर की दस आज्ञाँए:

1. *मैं, प्रभु, तुम्हारा ईश्वर हूँ ! प्रभु अपने परमेश्वर की आराधना करना, उसको छोड़ और किसी की नहीं।*
2. *प्रभु अपने ईश्वर का नाम व्यर्थ न लेना।*
3. *प्रभु का दिन पवित्र रखना।*
4. *अपने माता–पिता का आदर करना।*
5. *मनुष्य की हत्या न करना।*
6. *व्यभिचार न करना।*
7. *चोरी न करना।*
8. *झूठी गवाही न देना।*
9. *पर–स्त्री की कामना न करना।*
10. *पराये धन और वस्तु का लालच न करना।*

प्रभु येशु ने आकर मूसा–संहिता को पूर्णता तक पहुँचाया था और उन्होंने दो प्रमुख आज्ञाओं में ही इन दस आज्ञाओं को समा लिया। प्रभु येशु ने कहा, "यह न समझो कि मैं संहिता अथवा नबियों के लेखों को रद्द करने आया हूँ। उन्हें रद्द करने नहीं, बल्कि पूरा करने आया हूँ। मैं तुम लोगों से कहता हूँ–आकाश और प थ्वी भले ही टल जाये, किन्तु संहिता की एक मात्रा अथवा एक बिन्दु भी पूरा हुए बिना नहीं टलेगा।"

(सन्त मत्ती 5:17-18)

प्रभु येशु के द्वारा दी दो प्रमुख आज्ञाँए:

1. *अपने प्रभु ईश्वर को अपने सारे हृदय, अपनी सारी आत्मा, अपनी सारी बुद्धि और सारी शक्ति से प्यार करो। यह सबसे बड़ी और पहली आज्ञा है।*
2. *अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार करो।*

इन्हीं दो आज्ञाओं पर समस्त संहिता और नबियों की शिक्षा अवलम्बित है।

हम पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें

हे पवित्रात्मा ! अपनी शान्ति से मुझे भर दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! अपने वरदानों से मुझे भर दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! पवित्र वचन से मुझे भर दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! मुझे ज्ञान–विवेचन दे दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! पापों और पुण्यों को समझने की कृपा मुझे प्रदान कर दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! सत्य के मार्ग पर चलने की कृपा मुझे दे दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! दूसरों को भी तेरे चरणों पर लाने की कृपा मुझे प्रदान कर दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! अपनी योजनाँए मुझे समझा दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! मुझे अपना प्रेषित बना दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! मुझे अपनी सन्तान बना दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! मुझे स्वर्ग राज्य में प्रवेश मिलने की कृपा प्रदान कर दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! हमेशा तेरी स्तुति करने की कृपा प्रदान कर दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! मुझे प्रार्थना करना सिखा दीजिए।

हे पवित्रात्मा ! मुझे अपना साक्षी बना दीजिए।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण जीवन

पवित्र ग्रन्थ के अनुसार पवित्र–आत्मा से पूर्ण रुप से संचालित व्यक्ति ही ईश्वर की सन्तान कहलाते हैं। ऐसे व्यक्ति ईश्वर की इच्छा पूर्ण करते हैं।

अगर ईश्वर की पवित्र आत्मा हमारे अन्दर निवास कर ले तो वही आत्मा हमें पाप और पुण्य, सत्य और झूठ, अच्छे

और बुरे, सब के बारे में समझायेगी। हमारा यह शरीर स्वंय ही ईश्वर का आलय है और इस आलय को स्वच्छ तथा पवित्र रखने के लिये, हम सदा प्रार्थना करते रहें।

"क्या आप नहीं जानते कि आप ईश्वर के मन्दिर हैं और ईश्वर का आत्मा आप में निवास करता है? यदि कोई ईश्वर का मन्दिर नष्ट करेगा, तो ईश्वर उसे नष्ट करेगा; क्योंकि ईश्वर का मन्दिर पवित्र है और वह मन्दिर आप हैं।"

(1 कुरिन्थियों 3:16-17)

"पुत्र! क्या तुमने पाप किया है? तो फिर ऐसा मत करो और अपने पुराने पापों के लिए क्षमा माँगो। साँप के सामने की तरह पाप से दूर भाग जाओ। यदि पास आओगे, तो वह तुमको काटेगा। उसके दाँत सिंह के दाँतों – जैसे हैं; वे मनुष्य की आत्माओं का विनाश करते हैं।" **(प्रवक्ता ग्रन्थ 21:1-2)**

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति स्वार्थ तथा लोभ को त्याग कर दूसरों की भलाई और सेवा के लिये निस्संकोच कार्य करता है।

येशु ने कहा "यदि मेरे वचन तम्हारे अन्दर हों तो तुम जो माँगोगे, तुम्हें मिल जायेगा।"

भाग - 2
सामान्य प्रार्थनाँए

क्रूस का चिन्ह

पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम पर। आमेन।

प्रभु येशु ने हमें इस प्रकार प्रार्थना करना सिखलाया–

प्रभु की विनती

हे पिता हमारे, जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र किया जाए, तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में है वैसे प थ्वी पर भी पूरी हो। हमारा प्रतिदिन का आहार आज हमें दे, और हमारे अपराध हमें क्षमा कर, जैसे हम भी अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं, हमें परीक्षा में न डाल, परन्तु बुराई से बचा। आमेन।

प्रणाम मरिया

प्रणाम मरिया, कृपापूर्ण, प्रभु तेरे साथ है। धन्य तू स्त्रियों में और धन्य तेरे गर्भ का फल येशु।

हे सन्त मरिया, परमेश्वर की माँ, प्रार्थना कर हम पापियों के लिए, अब और हमारे मरने के समय। आमेन।

पवित्र त्रित्व की स्तुति

पिता, पुत्र और पवित्रात्मा की बड़ाई हो, जैसे वह आदि में थी, अब है और अनन्त काल तक सदा रहेगी। आमेन।

हे माँ मरियम! हे स्वर्ग की रानी! प्रभु येशु की माँ, हमारे लिए मध्यस्थ करना एवं अपने प्रिय पुत्र से प्रार्थना करना कि हम इस संसार की हर पैशाचिक शक्तियों और प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर अपने जीवन के अंतिम क्षण तक उनके वचनों का पालन कर उनके दिखाए मार्ग पर चल सकें और ईश्वर के विश्वस्त, विनम्र एवं आज्ञाकारी सेवक बन सकें। आमेन।

पवित्र कुवाँरी मरिया की माला विनती

पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम पर। आमेन।

प्रारम्भ प्रार्थना -

हे पवित्र माला की रानी ! आप फातिमा में गड़रियों के बच्चों को प्रकट हुईं और आपने ही उन्हें पवित्र माला के छिपे रहस्य को समझाने और सिखाने की अपनी सर्वप्रथम इच्छा प्रकट की। इस पवित्र माला के रक्षादायक रहस्य का ध्यान करके हमें उसके फल से सम्पन्न होने के लिये, इस धरती में पूर्ण शान्ति स्थापित करने के लिये, और पापियों के मन परिवर्तन का हमें उपकरण बनाने के लिये हम पर कृपा कर दीजिये। हे माँ ! इस माला को भक्तिपूर्वक करने के लिये हमारी सहायता कर। इस माला से हम विभिन्न कार्यों की अपेक्षा करते हैं। यदि आपके पुत्र वह हमारे लिए करना चाहें, तो उन्हें हमारे लिए करने की कृपा कर दें। इस प्रार्थना को शुरु करने वाले हम सभी लोगों को आपके पुत्र के प्रशंसनीय प्रिय जन बन कर जीने के लिए और स्वर्ग के अनन्त जीवन को प्राप्त करने के लिये हे पवित्र माँ! हमारे लिये प्रार्थना कर। आमेन।

प्रेरितों का धर्मसार

हम अपने विश्वास को प्रकट करें-

हम स्वर्ग और प थ्वी के स ष्टिकर्ता, सर्वशक्तिमान् पिता

ईश्वर में विश्वास करते हैं और उसके इकलौते पुत्र, हमारे प्रभु येशु ख्रीस्त में हम विश्वास करते हैं, जो पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में आए और कुँवारी मरियम से जन्मे। उन्होंने पोंतियुस पीलातुस के शासनकाल में दुःख भोगा। वह क्रूस पर चढ़ाए गए, मर गये, दफनाए गए और अधोलोक में उतरे। वह तीसरे दिन म तकों में से जी उठे, स्वर्ग गए, सर्वशक्तिमान पिता ईश्वर के दाहिने विराजमान हैं और वहाँ से जीवितों और म तकों का न्याय करने आऐंगे। हम पवित्र आत्मा, पवित्र काथलिक, कलीसिया, धर्मियों की सहभागिता, पापों की क्षमा, शरीर के पुनरुत्थान, और अनन्त जीवन में विश्वास करते हैं। आमेन।

हे पिता हमारे....................

1. हे स्वर्गिक पिता की पुत्री ! हे पवित्र माँ ! हमें ईश्वरीय विश्वास में पूर्ण होकर उससे फल प्राप्त करने के लिये अपने प्रिय पुत्र से हमारे लिये प्रार्थना कर।

प्रणाम मरिया............

2. ईश्वर पुत्र की माँ, हमें ईश्वर की इच्छा अनुसार चलने के लिए और उसी में निरंतर बढ़ते रहने के लिए अपने प्रिय पुत्र से हमारे लिए प्रार्थना कर।

प्रणाम मरिया............

3. पवित्र आत्मा को सबसे प्रिय माँ, हमें ईश्वरीय प्रेम में निरन्तर बढ़ते रहने की कृपा के लिए अपने प्रिय पुत्र से हमारे लिए प्रार्थना कर।

प्रणाम मरिया............

पिता, पुत्र और पवित्रात्मा की बड़ाई हो, जैसे वह आदि में थी, अब है और अनन्त काल तक सदा रहेगी। आमेन।

येशु से विनती

हे मेरे येशु, हमारे पापों को क्षमा कर, नरक की आग से हमें बचा। सभी आत्माओं को स्वर्ग की ओर ले चल, विशेषकर उन आत्माओं को, जिन्हें तेरी दया की अति आवश्यकता है। आमेन।

पु०: हे पवित्र माला की रानी सब: हमारे लिए प्रार्थना कर।

आनन्द के पाँच भेद

(सोमवार तथा शनिवार)

1. स्वर्ग दूत का सन्देश

सुख के पहले भेद पर हम यह ध्यान करें कि पवित्र कुँवारी मरिया ने गाब्रिएल दूत से संदेश पाया कि वह हमारे मुक्तिदाता की माता होगी। (हर एक भेद को पढ़ने के पश्चात्, एक बार **हे पिता हमारे**, दस बार **प्रणाम मरिया**,

एक बार **पवित्र त्रित्व की स्तुति**, एक बार **येशु से विनती** इत्यादि प्रार्थनाँए पढ़ें।)

2. मरिया की एलीज़बेथ से भेंट

सुख के दूसरे भेद पर हम यह ध्यान करें कि जब कुँवारी मरिया ने सुना कि उसकी सम्बन्धी एलीज़बेथ गर्भवती है, तो वह तुरन्त उससे मिलने के लिए गई और उसके साथ तीन महीने तक रही।

3. प्रभु येशु का जन्म

सुख के तीसरे भेद पर हम यह ध्यान करें कि पवित्र कुँवारी मरिया ने अपने पुत्र हमारे प्रभु-ईश्वर मुक्तिदाता येशु ख्रीस्त को बेथलेहेम शहर के पास गौशाले में जन्म दिया और उसे एक चरनी में रखा।

4. प्रभु येशु का मन्दिर में चढ़ाया जाना

सुख के चौथे भेद पर हम यह ध्यान करें कि पवित्र कुँवारी मरिया ने अपने पुत्र – हमारे मुक्तिदाता येशु ख्रीस्त को येरुसालेम के मन्दिर में चढ़ाया और वहाँ धर्मी शमाऊन ने उसे अपने हाथों में बड़ी प्रसन्नता से उठा लिया।

5. प्रभु येशु का मन्दिर में पाया जाना

सुख के पाँचवे भेद पर हम यह ध्यान करें कि पवित्र कुँवारी मरिया ने अपने खोये हुये पुत्र को ढूँढ़ते हुए तीन दिन पश्चात् उसे मन्दिर में धार्मिक गुरुओं के मध्य बैठे और उन से प्रश्न करते हुए पाया। उस समय वह बारह वर्ष के थे।

प्रकाश के पाँच भेद

(वीरवार)

1. प्रभु येशु का बपतिस्मा

प्रकाश के पहले भेद पर हम यह ध्यान करें कि येशु ने यर्दन नदी के तट पर योहन बपतिस्ता से बपतिस्मा ग्रहण किया। बपतिस्मा के बाद स्वर्ग खुला, ईश्वर का आत्मा कपोत के रुप में येशु के ऊपर उतरा और स्वर्ग से परमेश्वर ने कहा, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिसपर मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।"

2. काना में विवाह

प्रकाश के दूसरे भेद पर हम यह ध्यान करें कि कैसे येशु ने काना मे विवाह में माँ मरियम की मध्यस्थता एवं ईश

वचन के द्वारा पानी को अंगूरी में बदल दिया।

3. स्वर्गराज्य की घोषणा और पश्चाताप का बुलावा

प्रकाश के तीसरे भेद पर हम यह ध्यान करें कि कैसे येशु ने ईश्वर के सुसमाचार का प्रचार किया यह कहते हुए, "समय पूरा हो चुका है और ईश्वर का राज्य निकट आ गया है। इसलिए पश्चाताप करो और सुसमाचार में विश्वास करो।"

4. प्रभु येशु का रुपान्तरण

प्रकाश के चौथे भेद पर हम यह ध्यान करें कि कैसे ताबोर पर्वत पर येशु का अपने तीन शिष्यों के समक्ष रुपान्तरण हुआ और उन्होंने येशु को उज्जवल वस्त्र पहने देखा। तब स्वर्ग से यह वाणी सुनाई दी, "यह मेरा प्रिय पुत्र है। इसकी सुनो।"

5. पवित्र परम प्रसाद की स्थापना

प्रकाश के पाँचवें भेद पर हम यह ध्यान करें कि कैसे येशु ने अपने शिष्यों के साथ अन्तिम भोज करते समय उन्हें अपने शरीर और रक्त को रोटी और दाखरस के रुप में

देकर परम प्रसाद संस्कार की स्थापना की और यह कहा, "यह तुम मेरी स्म ति में किया करो।"

दु:ख के पाँच भेद

(मंगलवार तथा शुक्रवार)

1. प्रभु येशु का मरण संकट

दु:ख के पहले भेद पर हम यह ध्यान करें कि जब हमारे प्रभु येशु रव्रीस्त बाग में प्रार्थना कर रहे थे तब उस समय उनका पसीना रक्त के समान रहा।

2. कोड़ों की मार

दु:ख के दूसरे भेद पर हम यह ध्यान करें कि हमारे प्रभु येशु रव्रीस्त बड़ी निर्दयता पूर्वक कोड़ों से पीटे गये।

3. काँटों का मुकुट

दु:ख के तीसरे भेद पर हम यह ध्यान करें कि हमारे प्रभु येशु रव्रीस्त के सिर पर काँटों का ताज रखा गया।

4. येशु का क्रूस ढ़ोना

दु:ख के चौथे भेद पर हम यह ध्यान करें कि हमारे

प्रभु येशु ख्रीस्त के कंधों पर बड़ा बोझल क्रूस रखा गया।

5. येशु का क्रूस पर ठोका जाना और मरना

दु:ख के पाँचवे भेदब पर हम यह ध्यान करें कि जब हमारे प्रभु येशु ख्रीस्त कलवरी नामक पर्वत पर पहुँचे तो उनके वस्त्र उतारे गये, वे क्रूस पर ठोके गये और उसी पर मर गये।

महिमा के पाँच भेद

(रविवार तथा बुधवार)

1. प्रभु येशु का जी उठना

महिमा के पहले भेद पर हम यह ध्यान करें कि हमारे प्रभु येशु ख्रीस्त अपने दु:ख और म त्यु के पश्चात् तीसरे दिन बड़ी महिमा और विजय सहित जी उठे और फिर कभी नहीं मरेंगे।

2. प्रभु येशु का स्वर्गारोहण

महिमा के दूसरे भेद पर हम यह ध्यान करें कि हमारे प्रभु येशु ख्रीस्त अपने जी उठने के पश्चात् चालीस दिन अपने चेलों को दिखाई दिये और फिर उनके सम्मुख स्वर्ग

को चले गये।

3. पवित्र आत्मा का प्रेरितों पर उतरना

महिमा के तीसरे भेद पर हम यह ध्यान करें कि हमारे प्रभु येशु ख्रीस्त ने अपने पिता के दाहिने हाथ पर बैठ कर अपने चेलों पर प्रार्थना भवन में पवित्र आत्मा भेजा, जहाँ वे पवित्र मरिया के साथ सब एकत्रित थे।

4. मरिया का स्वर्ग में उद्‌ग्रहण

महिमा के चौथे भेद पर हम यह ध्यान करें कि पवित्र कुँवारी मरिया अपने पुत्र के स्वर्गारोहण के कुछ समय उपरान्त इस संसार से गुजर गईं और स्वर्गदूतों ने उनको आत्मा और देह सहित स्वर्ग में उठा लिया।

5. स्वर्ग में मरिया का मुकुट पाना

महिमा के पाँचवें भेद पर हम यह ध्यान करें कि पवित्र कुँवारी मरिया ने अपने ईश्वरीय पुत्र के हाथों स्वर्ग और प थ्वी की रानी का मुकुट पाया। इस भेद में हम संतों की महिमा पर भी ध्यान करें।

पवित्र कुँवारी मरिया को स्तुति-विनती

हे प्रभु दया कर।
हे प्रभु दया कर।
हे ख्रीस्त दया कर।
हे ख्रीस्त दया कर।
हे प्रभु दया कर।
हे प्रभु दया कर।
हे ख्रीस्त हमारी विनती सुन।
हे ख्रीस्त हमारी विनती पूरी कर।

स्वर्गवासी पिता ईश्वर,	**हम पर दया कर।**
पुत्र ईश्वर दुनिया के मुक्तिदाता,	**हम पर दया कर।**
पवित्रात्मा ईश्वर,	**हम पर दया कर।**
पवित्र त्रित्व एक ही ईश्वर,	**हम पर दया कर।**
संत मरिया,	**हमारे लिए प्रार्थना कर।**
ईश्वर की पवित्र माँ,	"
कुँवारियों में पवित्र कुँवारी,	"
ख्रीस्त की माता,	"
ईश्वरीय क पा की माता,	"
कलीसिया क पा की माता,	"
अति निर्मल माता,	"

अति शुद्ध माता,	**हमारे लिए प्रार्थना कर।**
अछूति माता,	"
निष्कलंक माता,	"
दुलार योग्य माता,	"
प्रशंसनीय माता,	"
सुसम्मति माता,	"
स जनहार की माता,	"
बचाने वाले की माता,	"
अति चौकस कुँवारी,	"
आदर योग्य कुँवारी,	"
स्तुति योग्य कुँवारी,	"
शक्तिमान कुँवारी,	"
दयालु कुँवारी,	"
ईमानदार कुँवारी,	"
न्याय के दर्पण,	"
प्रज्ञा के सिंहासन,	"
हमारे आनन्द की जड़,	"
आत्मिक पात्र,	"
आदर के पात्र,	"
भक्ति के उत्तम पात्र,	"
आत्मिक गुलाब,	"

दाऊद के गढ़, **हमारे लिए प्रार्थना कर।**
हाथी दाँत के गढ़, "
सुवर्ण मंदिर, "
व्यवस्थान की मंजूषा, "
स्वर्ग के द्वार, "
भोर के तारे, "
रोगियों के स्वास्थ्य, "
पापियों की शरण, "
दुःखियों की दिलासा, "
ख्रीस्तानों की सहायता, "
दूतों की रानी, "
धर्मपुर्खों की रानी, "
आगम कहने वालों की रानी, "
प्रेरितों की रानी, "
शहीदों की रानी, "
धर्मगवाहों की रानी, "
कुँवारियों की रानी, "
सब सन्तों की रानी, "
रानी जो आदि पाप रहित गर्भ में पड़ी, "
स्वर्ग में उद्ग्रहित रानी, "

अति पवित्र माला की रानी, "
पवित्र परिवार की रानी, "
शान्ति की रानी, "
हे ईश्वर के मेमने, जो संसार के पाप हर लेता है।
सबः प्रभु हमें क्षमा कर।
हे ईश्वर के मेमने, जो संसार के पाप हर लेता है।
सबः प्रभु हमारी विनती पूरी कर।
हे ईश्वर के मेमने, जो संसार के पाप हर लेता है।
सबः हम पर दया कर।
पु०: हे ईश्वर की पवित्र माँ हमारे लिए प्रार्थना कर।
सबः कि हम ख्रीस्त की प्रतिज्ञाओं के योग्य बन जायें।

हम प्रार्थना करें - हे ईश्वर, जिसके इकलौते पुत्र ने अपने जीवन, म त्यु एवं पुनरुत्थान से हमारे लिए अनन्त जीवन प्राप्त किया है। हम तुझसे विनती करते हैं कि पवित्र कुँवारी मरिया की अति पवित्र माला के इन भेदों पर ध्यान करते हुए, जो कुछ वे हमें सिखाते हैं हम उनका अनुकरण करें और जिनकी वे प्रतिज्ञा करते हैं हम उनको प्राप्त करें। उसी हमारे प्रभु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन।

पु० : ईश्वर का वचन मुझ पर पूरा होने के लिए
सब : हे पवित्र माँ मेरे लिए प्रार्थना कर।

कुँवारी मरिया से प्रार्थना

तेरी शरण में हम दौड़े आते हैं, हे ईश्वर की पवित्र माँ! जो विनती हम अपनी आवश्यकताओं में करते हैं उसको अस्वीकार मत कर, लेकिन हे प्रतापी और धन्य कुँवारी, हमको सदा जोखिमों से बचा। आमेन।

प्रणाम रानी

प्रणाम रानी! दया की माँ । हमारा जीवन, हमारी मधुरता और आशा। तुझे प्रणाम। हम हेवा की निर्वासित संतान तुझे पुकारते हैं। हम इस दुःख पूर्ण संसार में रोते और विलाप करते हुए तेरा नाम लेते हैं। हे हमारी माता! क पया हम पर दया—द ष्टि कर और हमारे इस निर्वासन के बाद अपने गर्भ का पवित्र फल, येशु हमें दिखा। हे दयालु ! हे प्रेममयी ! हे मधुर कुँवारी मरिया! आमेन।

हम प्रार्थना करें -

हे ईश्वर, क पया हमें, अपने सेवकों को, यह शक्ति प्रदान कर कि हम सदैव शरीर और आत्मा मे स्वस्थ रहें, तथा प्रतापी और नित्य कुँवारी मरिया की प्रार्थना द्वारा, इस संसार के दुःख से मुक्त होकर, स्वर्गीय आनन्द भोग सकें। उसी हमारे प्रभु येशु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन।

हे अपार दया की माँ, तेरी शरण में हम दौड़े आते हैं। जितनों ने भी तुझसे विनती करके जो अपेक्षाँए की हैं, उनमें से एक भी अपेक्षा की तूने उपेक्षा नहीं की है। कुँवारियों से पवित्र कुँवारी माँ, तुझ पर विश्वास करके तेरी शरण में आहें भरते हुए आँसुओं के साथ तेरे पास आकर तुझ से दया की याचना करते हैं। अवतरित वचन की माँ, हम पर दया करते हुए, हमारी विनती को स्वीकार करना। आमेन।

प्रभु येशु के पवित्र हृदय के प्रति भक्ति करुणा की माला-विनती

1. *हे हमारे पिता (एक बार)*
2. *प्रणाम मरिया (एक बार)*
3. *प्रेरितों का धर्मसार*
4. *हे परम पिता, आपके प्रिय पुत्र एवं हमारे मुक्तिदाता येशु के दिव्य शरीर और रक्त को हमारे और मानव जाति के पाप प्रायश्चित के लिए हम आपको समर्पित करते हैं। (एक बार)*
5. *तेरे प्रिय पुत्र येशु मसीह के कठिन दुःख एवं क्रूस मरण के नाम पर, हम में और सारी दुनिया में तेरी करुणा बनी रहे। (दस बार)*

6. हे पावन ईश्वर, हे पावन सर्वशक्तिमान, हे पावन अमर, हमपर और सारी दुनिया पर दया कर। (तीन बार)
7. अन्य चार भेदों के लिए भी इसी तरह अभिक्रम 4,5 और 6 दोहरायें।
8. प्रभु के समक्ष अपने निवेदन रखें और इस माला को उनके लिए समर्पित करें।

भाग - 3

प्रभु में नया जीवन

प्रभु येशु ने कहा, "मैं आपसे यह कहता हूँ– जब तक कोई दुबारा जन्म न ले, तब तक वह स्वर्ग का राज्य नहीं देख सकता।" **(सन्त योहन 3:3)**

"मैं आपसे यह कहता हूँ – जब तक कोई जल और पवित्र आत्मा से जन्म न ले, तब तक वह ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता"। **(सन्त योहन 3:5)**

दुबारा जन्म हमें स्वंय प्रभु ही अपने पवित्र आत्मा को हम पर बरसाकर दे सकते हैं। हम मनुष्य इस सांसारिक मोह-माया में फँसकर ईश्वर से दूर हो जाते हैं और पाप-पर-पाप करते जाते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि हमारे अन्दर ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, घ णा, झूठ, बेईमानी, अशान्ति इत्यादि सब बुराईयों का निवास हो जाता है और हम अपने शरीर के साथ-साथ अपनी आत्मा को भी खो देते हैं।

प्रभु येशु ने कहा "मनुष्य को इससे क्या लाभ यदि वह सारा संसार तो प्राप्त कर ले, लेकिन अपना जीवन ही गँवा दे? अपने जीवन के बदले मनुष्य दे ही क्या सकता है?" **(सन्त मारकुस 8:36-37; सन्त मत्ती 16:26)**

इसलिए हम प्रभु से प्रार्थना करें, बुराई से दूर रहें, विनम्र होकर अपने पापों की क्षमा माँगें और प्रभु को हर परिस्थिति में धन्यवाद और स्तुति करना सीखें। हम प्रभु से पवित्र आत्मा माँगें, उनसे प्रतिदिन प्रार्थना करें और उनके वचन रोज पढ़ें। इस शक्तिशाली जीवन्त वचन को सुनने और पढ़ने से और उसके आचरण से ही हमें पवित्र आत्मा प्राप्त होगी। ये पवित्र वचन हमें पवित्र बाइबिल से प्राप्त होते हैं।

प्रभु येशु ने कहा, "मैंने तम्हें जो शिक्षा दी है, वह आत्मा और जीवन है।" **(सन्त योहन 6:63)**

पवित्र आत्मा मिलने पर हम नई स ष्टि बन जायेंगे, हम ईश्वर की सन्तान बन जायेंगे और हम सभी बुराईयों और पापों से दूर रहेगें। इसका फल अनन्त जीवन, अनन्त सुख और शान्ति है। इसलिए हम शरीर से तथा उसकी वासनाओं से संचालित न होकर आत्मा से संचालित हों।

"यदि आप शरीर की वासनाओं के अधीन रहकर जीवन बितायेंगे, तो अवश्य मर जायेंगे। लेकिन यदि आप आत्मा की प्रेरणा से शरीर की वासनाओं का दमन करेंगे, तो आपको जीवन प्राप्त होगा। जो लोग ईश्वर के आत्मा से संचालित हैं, वे सब ईश्वर के पुत्र हैं।"

(रोमियों 8:13-15)

हमें अपने शरीर को पवित्र बना कर रखना चाहिए क्योंकि लिखा है –

"क्या आप लोग यह नहीं जानते कि आपका शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है ? वह आप में निवास करता है और आप को ईश्वर से प्राप्त हुआ है। आपका अपने पर अधिकार नहीं है; क्योंकि आप लोग कीमत पर खरीदे गये हैं। इसलिए आप लोग अपने शरीर में ईश्वर की महिमा प्रकट करें।" **(1 कुरिन्थियों 6:19-20)**

प्रभु का आत्मा जिसमें निवास करेगा, उस में प्रभु येशु और पिता परमेश्वर दोनों ही निवास करेंगे। प्रभु ने कहा, "यदि कोई मुझे प्यार करेगा, तो वह मेरी शिक्षा पर चलेगा। मेरा पिता उसे प्यार करेगा और हम उस के पास आकर उस में निवास करेंगे।"

(सन्त योहन 14:23)

"क्योंकि हम जीवन्त ईश्वर के मन्दिर हैं, जैसा कि ईश्वर ने कहा है—मैं उनके बीच निवास करूँगा और उनके साथ चलूँगा। मैं उनका ईश्वर होऊँगा और वे मेरी प्रजा होंगे। इसलिए दूसरों के बीच से निकल कर अलग हो जाओ और किसी अपवित्र वस्तु का स्पर्श मत करो – यह प्रभु का कहना है। तब मैं तुम्हें अपनाऊँगा; मैं तुम्हारे लिए पिता-जैसा होऊँगा और तुम मेरे लिए पुत्र-पुत्रियों-जैसे होगे।" **(2 कुरिन्थियों 6:16-18)**

"इसलिए हम शरीर और मन के हर प्रकार के दूषण से अपने को शुद्ध करें और ईश्वर पर श्रद्धा रखते हुए पवित्रता की परिपूर्णता तक पहुँचने का प्रयत्न करते रहें।"

(2 कुरिन्थियों 7:1)

"धोखे में न रहें! व्यभिचारी, मूर्तिपूजक, परस्त्रीगामी, लौण्डे और पुरुषगामी, चोर, लोभी, शराबी, निन्दक और धोखेबाज़ और अन्यायी ईश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे।"

(1कुरिन्थियों 6:9-10; गलातियों 5:19-21)

पवित्र ग्रन्थ के अनुसार हम किसी भी नशीली वस्तु का उपयोग नहीं करें। जैसे शराब, सिगेरट, बीड़ी, तम्बाकू, ड्रग्स इत्यादि। हम इन वस्तुओं के गुलाम न बन जायें जो स्वंय मनुष्य की स ष्टि है। यह ईश्वर की पहली आज्ञा

का उल्लंघन है क्योंकि हम जिसके अधीन होते हैं, उसी को मन में हम प्रथम स्थान देते हैं, उसी के बारे में हम सोचते रहते हैं और इस तरह हम ईश्वर को छोड़कर उसके आराधक बन जाते हैं। हम ऐसे व्यक्तियों की संगति भी छोड़ दें, जो इनका सेवन करते हैं, नहीं तो हम प्रलोभन में पड़ कर पाप कर जायेंगे। इसी तरह संसार की किसी भी वस्तु की अत्यधिक चाहत और लालच भी ईश्वर की प्रथम आज्ञा को भंग करती है। हम इसलिए सांसारिक इच्छाओं को त्याग कर, ईश्वर की आत्मा को प्राप्त कर, उसमें भरपूर होकर खुशी मनायें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए हम यह भजन गाँए –

भजन : आत्मा (3) पावन आत्मा

आत्मा, आत्मा, आत्मा, पावन आत्मा
आजा, आजा, आजा, आज मन में आजा

1. *तू ही है स ष्टिकर्ता, तू ही है जीवनदाता*
   तू ही है विश्वज्योति, तू ही है सर्वज्ञानी।
   आत्मा (3).......................................
2. *तू ही है चलानेवाला, तू ही है सिखाने वाला*
   तू ही है जलानेवाला, तू ही है बुझानेवाला।
   आत्मा (3).......................................

3. *तू ही है दया का सागर, तू ही है क पा का सागर*
   भर दो अभी मेरा मन, तेरी आत्मा से भर दो।
   आत्मा (3).......................................

"मनुष्य रोटी से ही नहीं जीता है। वह ईश्वर के मुख से निकलने वाले हर एक शब्द से जीता है।" **(सन्त मत्ती 4:4)**

हे जीवित परमेश्वर

Ch. : *हे जीवित परमेश्वर, हे जीवित परमेश्वर (2)*
जीवन-धाम में महिमा के साथ
जीवित परमेश्वर, हो जीवित परमेश्वर

1. *तूने मेरे भाई को चलने की शक्ति दी*
   और दौड़ने की शक्ति दी (2) धन्यवाद प्रभु (2)
   तूने मेरी बहन हो सुनने की कृपा दी
   और बोलने की कृपा दी (2) धन्यवाद प्रभु (2)
   आल्लेलूया (2)
2. *तूने हज़ारों को रोगों से मुक्ति दी*
   दुष्टात्मा से मुक्ति दी (2) धन्यवाद प्रभु (2)
   तूने हज़ारों को दिव्य दर्शन दे
   मन की शान्ति दी (2) धन्यवाद प्रभु (2)
   आल्लेलूया (5)

3. तूने कहा मुझसे तू नहीं डरना
मैं तेरे साथ हूँ (2) धन्यवाद प्रभु (2)
तूने कहा मुझसे मैं तेरा अब्बा हूँ
कुछ भी माँग ले (2) धन्यवाद प्रभु (2)
आल्लेलूया (5)

4. तूने मेरे भाई को देखने की कृपा दी
नया जीवन दिया (2) धन्यवाद प्रभु (2)
तूने मेरी बहन को पढ़ने की कृपा दी
और लिखने की कृपा दी (2) धन्यवाद प्रभु (2)
आल्लेलूया (5)

हे माँ मरियम

"आप नारियों में धन्य हैं और धन्य है आपके गर्भ का फल! धन्य हैं आप, जिन्होंने यह विश्वास किया कि प्रभु ने आप से जो कहा, वह पूरा हो जायेगा!"**(सन्त लूकस 1:42,45)**

Ch. : हे माँ मरियम, हे माँ मरियम,
धन्य है तू सबकी माँ (2)
कृपाओं से पूर्ण है स्वर्ग की रानी,
तेरी स्तुति हो माँ (2)

1. उस रात गौशाले में तूने,
हमें एक रक्षक दिया। (2)
कलवरी पर्वत पर तू हमारी माँ बनी,
मेरे प्रभु की तू माँ (2)

2. काना विवाह के दिन तूने,
सब लोगों को त प्त किया। (2)
तू ही प्रार्थना कर इस जीवन–धाम के लिए,
तू ही कृपा कर दे माँ (2)

तेरी आराधना

Ch. : तेरी आराधना मैं सदा करता रहूँ
मेरे प्रभु मेरे पिता मैं तुझमें रहूँ (2)

1. हे प्रभु! हे प्रभु! तू ही मेरा जीवन, तू ही मेरा मार्ग
2. हे प्रभु! हे प्रभु! तू ही मेरा स्वामी, सच्चा चरवाहा
3. हे प्रभु! हे प्रभु! प्रेम का सागर है तू,
दया का सागर तू
4. हे प्रभु! हे प्रभु! शान्ति देता है तू, शक्ति देता तू
5. हे प्रभु! हे प्रभु! पापों से मुक्ति देता है तू,
मुझे बचाता तू

तेरी आराधना (4) आल्लेलूया (4)

प्रभु येशु हमारे लिए कौन हैं?

प्रभु येशु ने कहा,

"जीवन की रोटी मैं हूँ। जो मेरे पास आता है, उसे कभी भूख नहीं लगेगी और जो मुझ में विश्वास करता है, उसे कभी प्यास नहीं लगेगी।" **(सन्त योहन 6:35)**

"संसार की ज्योति मैं हूँ। जो मेरा अनुसरण करता है, वह अन्धकार में भटकता नहीं रहेगा। उसे जीवन की ज्योति प्राप्त होगी।" **(सन्त योहन 8:12)**

"भला गड़ेरिया मैं हूँ। भला गड़ेरिया अपनी भेड़ों के लिए अपने प्राण दे देता है।" **(सन्त योहन 10:11)**

"मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ। मुझ से होकर गये बिना कोई पिता के पास नहीं आ सकता।" **(सन्त योहन 14:6)**

प्रभु येशु ने यह आज्ञा दी है, "संसार के कोने–कोने में जाकर सारी स ष्टि को सुसमाचार सुनाओ। जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा ग्रहण करेगा, उसे मुक्ति मिलेगी। जो विश्वास नहीं करेगा, वह दोषी ठहराया जायेगा। **विश्वास करने वाले** ये चमत्कार दिखाया करेंगे। वे मेरा नाम लेकर अपदूतों को निकालेंगे, नवीन भाषाँए बोलेंगे और साँपों को उठा लेंगे। यदि वे विष पियेंगे तो उस से उन्हें कोई हानि नहीं होगी। वे रोगियों पर हाथ रखेंगे और रोगी स्वस्थ हो जायेंगे।" **(सन्त मारकुस 16:15-18)**

भाग - 4
नोवेना-प्रार्थनाँए

नित्य सहायक माता, प्रार्थना कर हम बच्चों के लिये,
तू है जगत की रानी, विनती कर सदा सर्वदा। (3)

पुरोहित – हे परम पवित्र और निष्कलंक कुँवारी तथा हमारी माता मरिया, तू ही हमारी शरण, सहारा और भरोसा है।

सब – आज हम लोग तेरे पास आये हैं। हम ईश्वर को धन्यवाद देते हैं कि उसने हमारे लिए सब कृपाँए तेरे ही हाथ में सौंप दी हैं। हे नित्य सहायक माता ! हम तुमसे प्रेम रखते हैं और उस प्रेम को प्रकट करने के लिए प्रतिज्ञा करते हैं कि हम सदैव तेरे भक्त रहेंगे और अपनी पूरी शक्ति के साथ, अन्य लोगों को तेरे पास लाने का प्रयत्न करेंगे।

पु० – हे नित्य सहायक माता, तू परम शक्तिशाली परमेश्वर से हमारे लिये ये कृपाँए माँग ले।

सब – प्रलोभन के समय विजय पाने की शक्ति, येशु ख्रीस्त के प्रति प्रेम, जीवन भर ईश्वर की विश्वासपूर्वक सेवा और अंत मे पवित्र मौत की महा कृपा, ताकि हम तेरे साथ और तेरे पुत्र के साथ अनन्तकाल तक रह सकें।

पु० – हे नित्य सहायक माता।
सब – हमारे लिए प्रार्थना कर।

पु० – हे प्रभु येशु ख्रीस्त ! तूने गलीली काना नगर में माता मरिया के केवल एक ही शब्द पर पानी को अंगूर के रस में बदल दिया था। अब तू इन सब लोगों की सुन जो यहाँ नित्य सहायक माता के सम्मान में आदरपूर्वक उपस्थित हुए हैं। हमारी प्रार्थना सुन और हमारा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार कर।

सब – हे नित्य सहायक माता, हम तेरे शक्तिशाली नाम को पुकारते हैं। तू जीवितों की रक्षक और म तकों की मुक्ति है। तेरा नाम सदैव हमारे मुँह पर रहे, विशेषकर परीक्षा और म त्यु के समय। तेरे नाम का अर्थ ही भरोसा और शक्ति है। हे धन्य माता ! जब–जब हम तुझे पुकारें हमारी सहायता कर। तेरा नाम लेकर केवल हम संतुष्ट ही नहीं रहेंगे बल्कि हमारा दैनिक जीवन भी प्रकट करेगा कि तू सचमुच हमारी नित्य सहायक माता है।

पु० - सांसारिक आवश्यकताओं के लिए प्रार्थना -

सब – हे नित्य सहायक माता, हम पूरे विश्वास के साथ तेरे सामने आये हैं। हम अपने दैनिक जीवन की कठिनाइयों के लिए सहायता माँगते हैं। दुःख और तकलीफें कभी–कभी हमें निराश कर देती हैं।

दुर्भाग्य और विपत्तियाँ हमारे जीवन में कष्ट पहुँचाती हैं और हमें चारों तरफ से संकट का सामना करना पड़ता है। हम पर दया कर।

हे अति दयालु माता, हमारी आवश्यकताओं में हमारी सहायता कर। हमको हमारे कष्टों से मुक्ति दिला और यदि ईश्वर की यही इच्छा हो कि हम और अधिक समय तक दुःख सहते रहें तो ऐसी दशा में इन्हें प्रेम और धैर्य के साथ सहने में मदद कर। हे नित्य सहायक माता, अपने पुण्य के सहारे नहीं बल्कि तेरी शक्ति और प्रेम पर विश्वास करते हुए हम तुझसे यह सब माँगते हैं।

निवेदन व धन्यवाद पत्रों को पढ़ना

निवेदन-

अनुवाक्य - हे प्रभु ! हमारी माता मरिया के द्वारा, हमारी प्रार्थना सुन।

पु०–हम प्रार्थना करें–

1. हे प्रभु ! हमारे संत पापा को, हमारे धर्माध्यक्षों को, हमारे पुरोहितों को और हमारे सब राष्ट्रीय नेताओं को बुद्धि और सूक्ष्म द ष्टि प्रदान कर।

2. **पु०**–हे प्रभु ! सब मनुष्य सामाजिक शान्ति और धार्मिक एकता में भाइयों जैसे रहें।

3. **पु०**– हे प्रभु ! परिवार नोवेना के सब पुत्र–पुत्रियों को अपने व्यवसाय पसन्द करने में मार्ग दर्शन दे।

4. **पु०**–हे प्रभु ! नोवेना के लोग तेरी पवित्र इच्छानुसार अपने स्वास्थ्य की रक्षा करें और बीमार अपना स्वास्थ्य पुनः प्राप्त करें।

5. **पु०**–हे प्रभु ! नोवेना के सब म त सदस्यों को और सभी म तकों की आत्माओं को अनन्त शान्ति प्रदान करें।

6. **पु०**– हे प्रभु ! हमारे इस नोवेना के सभी विशेष उद्देश्यों और उपस्थित लोगों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में मार्ग दिखा।

7. **पु०**– हे प्रभु ! हम सब मनुष्य तेरे सत्य के प्रकाश की तीव्रता का अनुभव करें।

पु०– हम अपने निजी निवेदन नित्य सहायक माता के सामने रखें। (ठहराव)

धन्यवाद-

अनुवाक्य - हे प्रभु ! हम अपनी माता मरिया के द्वारा, तुझे धन्यवाद देते हैं।

1. **पु०**–कृपा के उस नवजीवन के लिए जो तूने हमें प्रदान किया है।

2. **पु०**–उन सब कृपाओं के लिए जो मंडली के संस्कारों द्वारा हमें मिलती हैं।

3. **पु०**– उन सब आत्मिक तथा सांसारिक कृपादानों के लिए जो तूने हमारे नोवेना परिवार को दिए हैं।

पु०– हम अपने पाये हुए उपकारों व कृपादानों के लिए नित्य सहायक माता को धन्यवाद दें। (ठहराव)

गीत : मरियम माँ अपने चित्र

मरियम माँ अपने चित्र के
नयनों से हमें तू देखना
चरणों पर आकर खड़े हैं
हम बच्चों पर तू अब कृपा करना।

मधुर प्रेम से भरे वह नेत्र
जो ममता से परिपूरित हैं
उन पवित्र शुभ नेत्रों से
हम बच्चों को तू ज़रा देख ले।

धर्म ग्रन्थ का पाठ और उपदेश

"तुम प्रभु पर अपना भार छोड़ दो, वह तुम को सँभालेगा। वह धर्मी को विचलित नहीं होने देगा।" **(स्तोत्र ग्रन्थ 55:23)**

पु०–बीमारों के लिए प्रार्थना –

सब– हे प्रभु, तेरे दास शरीर की बीमारियों से पीड़ित हैं। इन पर दया द ष्टि रख। तूने जिन आत्माओं की स ष्टि की है, उन्हें स्फूर्ति दे। ये तेरे दिये दण्ड से सुधर कर समझ जाँए कि तेरी दया ने ही उन्हें बचाया है। हमारे प्रभु येशु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन।

पु०–(हाथ बढ़ाकर)

प्रभु येशु ख्रीस्त आपके साथ हों और आपकी रक्षा करें। वह आप में निवास करें और आपको सुरक्षित रखें। वह आपके आगे चलें और आपको मार्ग दिखायें। वह आपके पीछे रहें और आपको संभालें। वह आपके ऊपर विराजमान हों और आपको आशीर्वाद दें। पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर।

सब–आमेन।

पु०–"देख, अब से सब पीढ़ियाँ मुझे धन्य कहेंगी: इसलिए कि जो शक्तिमान् है, उसने मेरे लिये महान् काम किये हैं और उसका नाम पवित्र है।" हम माता मरिया के लिए ईश्वर के महान् काम मानकर माँ को धन्य कहें।

सब–हे नित्य सहायक माता, तू अति उदार और दयाशील है। परमेश्वर के सभी प्रदान किए हुए वरदान हमें तेरे ही द्वारा मिलते हैं। तू पापियों की आशा है। हे प्रिय माता, हमारी ओर ध्यान दे क्योंकि हम तेरी ओर मुड़े हैं। तेरे पास हमारी मुक्ति है। तू ही हमारा आसरा व भरोसा है। हम तेरे बच्चे हैं। प्रिय माता, तू हमारी रक्षा कर। यदि तू ऐसा करेगी तो हमें कोई डर न रहेगा। ख्रीस्त से हमारे लिए हमारे पापों की क्षमा माँग।

तू शैतान का सिर कुचलने वाली है। जब तू हमारे साथ है तब हमें डरने की कोई बात नहीं है। हमें केवल यही ड़र है कि हम परीक्षा के समय तुझे याद करने में न चूकें और परीक्षा में गिरकर अपनी आत्मा न खो दें। इसलिए, हे नित्य सहायक माता, कृपया हमारे पापों की क्षमा, येशु के प्रति प्रेम, अटल विश्वास और ऐसी कृपा प्रदान कर कि हम सदा तुझे याद करें।

पु०–सभी युगों के ख्रीस्त विश्वासियों के साथ हम माता मरिया की स्तुति करें तथा उसकी शरण लें।

सब–प्रणाम मरिया, कृपापूर्ण, प्रभु तेरे साथ है, धन्य तू स्त्रियों में और धन्य तेरे गर्भ का फल, येशु। हे सन्त मरिया, परमेश्वर

की माँ, प्रार्थना कर हम पापियों के लिए, अब और हमारे मरने के समय। आमेन।

पु०—हे परमेश्वर की पवित्र माँ, हमारे लिए ईश्वर से प्रार्थना कर।

सब—कि हम ख्रीस्त की प्रतिज्ञाओं के योग्य बन जाँए।

पु०-हम प्रार्थना करें-

हे प्रभु येशु ख्रीस्त ! तूने अपनी माता को हमारी भी माता बनाया है। इस कारण वह हमारी सहायता करने को तैयार रहती है। हम उसकी तस्वीर के सामने यहाँ उपस्थित हैं। हमारी प्रार्थना है कि उसकी सहायता व निवेदन द्वारा हम तेरी मुक्ति के फल सदा प्राप्त करते रहें। हे प्रभु, हम तुझसे निवेदन करते हैं, जो युगानुयुग जीता और राज्य करता है।

सब—आमेन।

गीत : हे माँ मरियम तेरा सहारा

हे माँ मरियम तेरा सहारा
हम नित्य खोजते हैं।
संतान समझ कर हमारी प्रार्थना
कृपा करके तू सुन ले।

भाग्य विहीनों को सदा तू देखना
सशक्त सहारा तू ही है।
तेरे पुत्र ने हमें सौंपा है तुझको
हमारी रक्षा तू कर दे।

प्रभु के दूत का सन्देश

प्रभु के दूत ने मरिया को सन्देश दिया।
और वह पवित्र आत्मा द्वारा गर्भवती हुई।

प्रणाम मरिया............

देख, मैं प्रभु की दासी हूँ।
तेरा कथन तुझसे पूरा हो ।

प्रणाम मरिया............

और शब्द देह बना।
और हमारे बीच में रहा।

प्रणाम मरिया............

हे परमेश्वर की पवित्र माँ, हमारे लिए प्रार्थना कर
कि हम ख्रीस्त की प्रतिज्ञाओं के योग्य बन जाँए।

हम प्रार्थना करें

हे प्रभु! हमने स्वर्गदूत के संदेश द्वारा तेरे पुत्र ख्रीस्त को देह धारण जान लिया। हमारी प्रार्थना सुन ले। अपनी कृपा हमारी आत्माओं को प्रदान कर कि हम उसी ख्रीस्त के

दुःख और क्रूस के द्वारा पुनरुत्थान की महिमा तक पहुँच सकें। उसी हमारे प्रभु येशु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन।

पिता, पुत्र और पवित्रात्मा की बड़ाई हो, जैसे.......... (तीन बार)

हे स्वर्ग की रानी

हे स्वर्ग की रानी! आनन्द कर। आल्लेलूया।
क्योंकि जिसको तूने पैदा किया। आल्लेलूया।
वह अपने कथनानुसार जी उठा। आल्लेलूया।
परमेश्वर से हमारे लिए प्रार्थना कर। आल्लेलूया।
आनन्द मना और प्रसन्न हो, हे कुँवारी मरिया। आल्लेलूया।
वह, सचमुच जी उठा। आल्लेलूया।

हम प्रार्थना करें

हे परमेश्वर, तू ने अपने पुत्र हमारे प्रभु येशु ख्रीस्त के पुनरुत्थान से संसार को आनन्द दिया है। हमारी प्रार्थना सुन और ऐसा कर कि हम उसकी माँ कुँवारी मरिया के द्वारा अनन्त जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकें। उसी हमारे प्रभु येशु ख्रीस्त के द्वारा। आमेन।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की बड़ाई हो, जैसे.........(तीन बार)

स्तुति करें हम आल्लेलूया

1.येशु है मेरा जीवनदाता, **स्तुति करें हम आल्लेलूया**
येशु है मेरा शान्तिदाता, **क्यों न कहें हम आल्लेलूया**

Ch. जो कुछ है मेरा उसका ही है,
उसकी दया से चलता यह जग सारा
ईश्वर की महिमा आल्लेलूया, भू पर शान्ति आल्लेलूया (2)

2. अनन्त जीवन मुझको वो देगा, **स्तुति करें हम आल्लेलूया**
वचन कभी न टलेगा उसका, **क्यों न कहें हम आल्लेलूया**
3. पापियों को वो माफ है करता, **स्तुति करें...**
बुराईयों से सबको बचाता, **क्यों न...**
4. कमज़ोर हूँ तो शक्ति वो देता, **स्तुति करें...**
निराशा में वो आशा देता, **क्यों न...**
5. भयभीत हूँ तो धैर्य वो देता, **स्तुति करें...**
अकेला हूँ तो साथ वो रहता, **क्यों न...**
6. उदास हूँ तो आनन्द वो देता, **स्तुति करें...**
अंधेरा हो तो ज्योति वो देता, **क्यों न...**

आल्ले(2) आल्लेलूया
आल्ले(2) आल्लेलूया

प्रतिदिन की पारिवारिक प्रार्थना

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर। आमेन। (थोडी देर स्तुति कीजिए। सब चिन्ताओं को भूल कर ईश्वर पर मन एकाग्र कर लीजिए।)

आल्लेलूया, आल्लेलूया, आल्लेलूया..............................

हे ईश्वर ! मेरे स्वर्गीय पिता, हे येशु ! हे पवित्र आत्मा ! मुझ पर दया कर। मेरे माता–पिता, भाई–बहनों और पूर्वजों पर अपनी दयाद ष्टि दिखा और जो पाप उन्होंने तेरे विरुद्ध किये हों, उन्हें क्षमा कर। उनके लिए मैं आपसे विनती और क्षमा याचना करता हूँ। उनको दण्ड का भागी नहीं बना और उनको क्षमादान देकर उनकी आत्मा को पवित्र कर दे। तेरे प्रिय पुत्र–पुत्री बनकर तेरी इच्छानुसार, तेरे वचन अनुसार अपना जीवन व्यतीत करने का उन्हें अनुग्रह दे।

हे पवित्र आत्मा ! मेरे अन्दर आज तेरी शक्ति और तेरी शान्ति उँड़ेल दे। मुझे तेरे प्रेम से परिपूर्ण कर। हे पावन आत्मा ! दिव्य ज्योति ! मुझे तेरी दया और कृपा का पात्र बना। हे ईश्वर की आत्मा, तेरे वरदानों से मुझे भर, तेरे वचनों को मुझे सिखा और उसे समझने की तथा उस

पर हमेशा चलते रहने की शक्ति दे। अपनी पवित्रता से मेरे पापों को धो डाल और मेरा हृदय निर्मल और स्वच्छ बना। इसके लिए हम अपने स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करें।

हे हमारे पिता........................

हे माँ मरियम! हे स्वर्ग की रानी! पवित्र परिवार की रानी, हमारी मध्यस्थ बन, हमारे लिए ईश्वर से याचना कर और हमें कृपाँए दिला दे–

प्रणाम मरिया....................... (10 बार)

पिता, पुत्र और पवित्रात्मा की बड़ाई हो, जैसे आदि में थी, अब है और अनन्त काल तक सदा रहेगी। आमेन।

हे दयामयी, सर्वशक्तिमान पिता! इस प्रार्थना को मैं अपने परिवार के लिए समर्पित कर रहा हूँ। उनको तेरी शांति, तेरे प्रेम और तेरी दया से भर और सभी को ज्ञान और विवेचन प्रदान कर। तेरे पवित्र परिवार जैसा पावन हमारा परिवार भी तेरी कृपा से बन जाये, यह मेरी तुझसे विनम्र प्रार्थना है। सभी प्रलोभनों और पैशाचिक बन्धनों से हमें दूर रख और हमें अन्त समय तक तेरे विश्वास मे द ढ़ बने रहने

का अनुग्रह दे। हमें दूसरों को प्रकाश देने वाला दीपक बना, दूसरों को तेरे चरणों पर लाने वाला माध्यम बना जिससे कि हमारे कार्यों को देख कर वे तेरी स्तुति करें और हमारे प्रेम को देखकर तुझपर विश्वास करें। हम अपने विचार, बात, कार्य और सुख–दुःख तुझे चढ़ाते हैं, और तुझसे विनय याचना करते हैं कि तू हमें अपनी कृपा दे, जिससे हम आज तेरा अपराध न करें, लेकिन सब बातों में तेरी पवित्र इच्छा पर चल सकें। हे प्रभु इस दीन सवेक की प्रार्थना को स्वीकार कर। आमेन।

पवित्र ग्रन्थ से हम एक छोटा-सा भाग पढें और उस पर मनन-चिन्तन करें। हम एक-दो भजन गा सकते हैं जिससे ईश्वर हमें अपने अनुग्रहों से भरें।

इन वचनों को ध्यान में रखें-

"प्रभु के सभी कार्य उत्तम हैं, वह समय पर सब आवश्यकताँए पूरी करता है। यह मत कहो, "यह उस से बुरा है", क्योंकि सब कुछ अपने समय पर अच्छा प्रमाणित होगा और अब सारे हृदय से ऊँचे स्वर में गाओ और प्रभु का नाम धन्य कहो।"

(प्रवक्ता-ग्रन्थ 39:39-41)

"जो मनुष्यों के लिए असम्भव है, वह ईश्वर के लिए सम्भव है।" **(सन्त लूकस 18:27)**

"तुम भूत–प्रेत साधने वालों और ओझों के पास नहीं जाओगे और उन से प्रश्न नहीं करोगे। अन्यथा उस से तुम दूषित हो जाओगे। मैं प्रभु, तुम्हारा ईश्वर हूँ।" **(लेवी ग्रन्थ 19:31)**

"सब बातों में अपनी अन्तगति याद रखो और तुम जीवन भर पाप नहीं करोगे।" **(प्रवक्ता-ग्रन्थ 7:40)**

सन्त अन्थोनी स्कूल, सैक्टर–9, फरीदाबाद, हरियाणा में हर रविवार सुबह 9 बजे से 1 बजे दोपहर तक की वचन की घोषणा तथा रोग शांति की प्रार्थना में आप भाग लें और शारीरिक तथा मानसिक चंगाई प्राप्त करें। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

जीवन-धाम

RESIDENCE : House No. 696, Sector-22, Faridabad-121005, Haryana. Phone : 0129-2231126

Visit us at our website : *www.jeevandham.org*
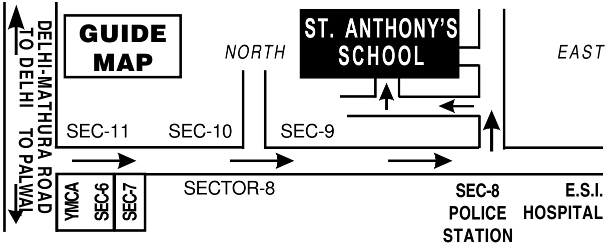
E-mail : *info@jeevandham.org*